शनि जयन्ती

16 मई 2026

शनि प्रसन्न दीक्षा

नवग्रहों में शनि को सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रह माना गया है, जिसका प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र - कर्म, चरित्र, संघर्ष और सफलता पर होता है

- शनि साधक में गहराई, गंभीरता और न्यायप्रियता का विकास करते है। शनि की कृपा से साधक न्याय पूर्ण, निष्पक्ष और कर्म क्रिया में गतिशील होता है।
- शनि साधक में संघर्षों से लड़ने की क्षमता विकसित करते है, जिससे शत्रु पक्ष उनके सामने नतमस्तक हो जाता है।
- शनि की कृपा से साधक सत्य, अनुशासन और परिश्रम के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए उच्चता के शिखर पर प्रतिष्ठित होता है।
- शनि की कृपा से साधक जिम्मेदार, आत्मनियन्त्रित, धैर्यवान और दृढ़ निर्णय लेने वाला बनता है, जिससे उसके कार्यों में बाधाएं स्वतः ही समाप्त हो जाती है।
- शनि की कृपा 'अति प्रदायक' (अधिक देने वाला) है और इसी प्रकार शनि की वक्र दृष्टि 'अति विनाशक' (सब कुछ नष्ट करने वाला) है।

यह तो निश्चित है कि शनि न्यायधीश की भांति कर्मफल प्रदान करते है इसीलिये शनि के प्रभाव से तीव्र हानि या तीव्र लाभ दोनों हो सकते है। सद्गुरु अपने शिष्य को अपने रक्षा क्षेत्र में ले लेते है, जिससे साधक को अपने पूर्व जन्म के दोषों को भोगना न पड़े और वर्तमान समय में श्रेष्ठ कर्म करें जिससे शनि भय से मुक्त होकर वह निरन्तर क्रियाशील रहे।

गुरु का आशीर्वाद, गुरु का शक्तिपात साधक के जीवन में रक्षा कवच बनकर कार्य करता है। यही सद्गुरु की शनि प्रसन्न दीक्षा प्रदान करने का रहस्य है।

शनि प्रसन्न दीक्षा न्यौ. (प्रति चरण) - 3100/-